चतुर्थ अध्याय

चतुर्थ अध्याय का शीर्षक "यशोधरा" काव्य की विशेषताएँ है । काव्य की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित प्रकारसे है ।

१] यशोधरा एक खण्डकाव्य
२] यशोधरा काव्य में भारतीय संस्कृति
३] यशोधरा काव्य में प्रकृतिवर्णन
४] यशोधरा काव्य में विरह-वर्णन
५] यशोधरा काव्य में नारीभावना
६] यशोधरा काव्य में गीतात्मकता
७] यशोधरा काव्य में काव्य सौंदर्य
८] यशोधरा काव्य की भाषाशैली
९] यशोधरा काव्य का उद्देश

उक्त सभी विशेषताओंकी विवेचना प्रस्तुत करने का प्रयास कीया है ।

१ यशोधरा एक खण्डकाव्य

डॉ. दुबे यह कहना चाहती है कि " खण्डकाव्यों में या तो जीवन के एक अंग का वर्णन होता है या ऐसी अनुभूति का चित्रण - होता है, जिसकी अवधिकाल सीमादृष्टि से विस्तृत हो । इस प्रकार अनुभूतियों के अनुक्रम और तारतम्य से युक्त पदयात्मक या गीतात्मक रचना को भी खण्डकाव्य कहा जा सकता है।"[१]

खण्डकाव्य के दो भेद माने जाते है एक एकार्थ खण्डकाव्य, दूसरा अनेकार्थ खण्डकाव्य । एकार्थ खण्डकाव्य में एक प्रकार के छंद में ही एक घटना या दृश्य का वर्णन किया जा सकता है तो अनेकार्थ खण्डकाव्यमें अनेक प्रकार के छन्दों में विविध भावों के साथ जीव के एक अंश का चित्रण होता है। महाकाव्य के समान इसका विस्तार नही होता जैसे गुप्तजीकी यशोधरा कृति । खण्डकाव्य की प्रमुख विशेषत: यह है कि खण्डकाव्यमें कथावस्तु सम्पुर्ण न होकर उसका एक अंश होता है। प्राय: जीवन की महत्वपूर्ण घटना या दृश्य का मार्मिक उद्‌घाटन होता है और अन्य प्रसंग सक्षेप में रहते है जैसे यशोधरा ।

" यशोधरा प्रेमाख्यानक खण्डकाव्य है और साकेत की अनुवर्ती रचना । गदय पदयमयी रचना होने के कारण यह चम्पु काव्य है । काव्यदृष्टिसे यह प्रबन्ध, नाट्यप्रणीत और मुक्तक रचना पध्दतियों के वैविध्य से समन्वित है। कलाकृति के रूपमें यह खण्डप्रबन्ध है ।"[२]

१] "द्विवेदीयुगीन खण्डकाव्य" - डॉ. सरोजनी अग्रवाल - पृ.१३

२] "मैथिलीशरण गुप्त का साहित्य" - मीतल व्दारका प्रसा - पृ. २०५

समस्त १९८९ में काव्यसाहित्य के क्षेत्रमें गुप्तजी की यशोधरा शीर्षक रचना प्रकाशित हुई । इनका अधिकांश भाग इतिहास सिध्द है, किन्तु अनेक प्रसंग कल्पनापरक है। गुप्तजीने लिखे गये काव्यग्रन्थों में से यही एक अलग ढंग का काव्य है ।

यशोधरा काव्य का कथासूत्र सुप्रसिध्द है । "यशोधरा" राहुलजननी गोपा के महान त्याग की कहानी है । यशोधरा की कथावस्तु इतिहास प्रसिध्द सिध्दार्थ महाभिनिष्क्रमण से सम्बन्धित है ।

यशोधरा चरित्र में अनेक पक्ष है प्रत्येक पक्ष उज्ज्वल और गम्भीर है । विरह, मिलन, वात्सल्य इनमें गांभीर्य दिखायी देता है । यशोधरा विरहीनी गर्विली और कामिनी तथा सिध्दार्थ गृहस्थ और साधक जीवन दिखाकर मैथिलीशरण गुप्तजीने कलात्मक सुरुचि और चयनवृत्ति का परिचय दिया है । यशोधरा का एक रूप कुल व वधू तथा गृह- स्वामिनी के रूपमें दिखाई पडता है। कुलवधू में शील का महत्व भारतवर्ष में अधिक दिया है । यशोधरा के गृहणी का आदर्श जीवनपर्यंत उसे कपिलवस्तु के राजभवन में स्थिर रखता है, किन्तु अंत में भी पति को पाने के लिए बाहर नहीं गयी क्योंकी -

"किंतु तात उनका निदेश बिना पाए मैं
यह पर छोड कहाँ और कैसे जाऊँगी । "

यशोधरा खण्डकाव्य में यशोधरा की उस मन:स्थितीका चित्रण हुआ है जिसमें वह यह निश्चय नहीं कर पायी है कि सिध्दार्थ का किस प्रकार स्वागत करे ।

मैथिलीशरण गुप्तजी "रससिध्द" कवि हैं, अत: वर्ज्य भावना को अन्य भावनोंके व्दारा पुष्ठ करने में प्रवीण है । "यशोधरा" और "साकेत" की सफलता का यही कारण है । मैथिलीशरण गुप्त को तुक वादी कवि मानते है । यशोधरा काव्य में प्रमुख रूपसे विप्रलम्भ शृंगार, वात्सल्य और शान्त रसों की नियोजना हुई है । कवि गुप्तजीने "यशोधरा" में सादृश्यमूलक अलंकार, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा और मानवीकरण का अधिक प्रयोग किया है । विरोधाभास का प्रयोग विरोधमूलक अलंकारोमें और शब्दालंकारो में श्लेष और वक्रोती का प्रयोग अधिक मिलता है ।

"यशोधरा " काव्यमें प्रकृतिवर्णन उद्दीपन रूपमें है । यशोधरा में , विप्रलम्भ शृंगार प्रधान काव्य है । प्रकृति के संश्लिष्ट चित्र यशोधरा में नही मिलते । ऋतुवर्णन की बारहमासा पध्दति के व्दारा गुप्तजीने प्रत्येक ऋतुमें यशोधराके वियोग की पीडा को अभिव्यक्त किया है । कविने अवसर पाते हुए प्रकृति को आलम्बन, मानवीकरण, अलंकरण, बिम्बप्रतिबिम्ब, और रहस्यतक रूपमें यशोधरा काव्य में चित्रित किया है ।

"यशोधरा" काव्य में पात्र है - यशोधरा, राहुल, गौतम, शुध्दोधन, महाप्रजावती, नन्द, छन्दक, गंगा, गौतमी और पुरजन है । इनमें से मुख्य पात्र चार ही है सिध्दार्थ, शुध्दोधन, यशोधरा और राहुल । शेष पात्र उपपात्र है । "यशोधरा" काव्य में यशोधरा सिध्दार्थ की पत्नी है। और सिध्दार्थ शुध्दोधन का पुत्र और यशोधरा का पति है । राहुल सिध्दार्थ और यशोधरा का पुत्र है । शुध्दोधन कपिलवस्तु के राजा और सिध्दार्थ के पिता है । महाप्रजावती सिध्दार्थ की सौतेली माँ, और शुध्दोधन की पत्नि थी । नन्द सिध्दार्थ का भाई है । नन्द आदर्श भाई के रूपमें चित्रित किया गया है । सिध्दार्थ उसके उपर राज्य का भार छोडकर चले गये । छन्दक सिध्दार्थ का सारथी है । सिध्दार्थ की माँ मायावती है, वह शुध्दोधन की पत्नि है ।

मैथिलीशरण गुप्त मुलत: व्दिवेदीयुगीन कवि हैं अत: उनकी भाषा संस्कृत के तत्सम शब्दों से युक्त है, कविने शब्दों के लालित्य और लय का ध्यान नहीं रखा, न उसकी संगीतात्मकता पर ध्यान दिया है । कविने चमत्कार उत्पन्न करने के लिए श्लेष मूलक शैली का अधिक प्रयोग किया है । यशोधरा में पुनरापन अधिक मिलता है । उसकी शब्दावली अन गढ अधिक है । संस्कृत के तत्सम शब्द भी गेय काव्य के विपरीत पडते है । कविने ऐसे शब्दों का बराबर प्रयोग किया है । यशोधरा की भाषा शुध्द और मसृण खडीबोली है, भाषा कांतकोमल है ।

यशोधरा काव्य गौतम की गुणगाथा न होकर यशोधरा की करुण कहानी है ।